धड़कने लगे दिल के तारों की दुनिया

डा विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

दोस्तों आज हम बात करेंगे एक बेहद प्रतिभाशाली संगीतकार 'एन दत्ता' के बारे में . हम सभी लोग उनके संगीत से सजे यादगार गीत गुनगुनाते तो हैं पर बहुत ही कम लोग इस विलक्षण संगीतकार के बारे में जानते हैं . एन. दत्ता का वास्तविक नाम 'दत्ताराम बाबूराव नाइक' था. उनका जन्म गोवा के एक छोटे से गाँव में हुआ. बचपन से ही संगीत और मराठी संगीतमय नाटकों के प्रति उनका गहरा लगाव था. जब घर वालों ने पढ़ाई पर ध्यान देने का दबाव बनाया, तो अपनी संगीत की लगन के चलते वे मात्र 12 वर्ष की आयु में बंबई आ गये . यहाँ उन्होंने शास्त्रीय संगीत का अध्ययन किया और संगीत की बारीकियाँ सीखीं. बंबई में वो प्रभात फेरी और गली मोहल्लों में होने वाले संगीत कार्यक्रमों में हिस्सा लेते थे. वहीं महान संगीतकार एस डी बर्मन ने उन्हें एक गीत गाते हुए सुना और जब उन्हें ये पता चला कि उस गाने की धुन भी एन दत्ता ने ही बनाई है तो वो बड़े प्रभावित हुए, और उन्होंने एन दत्ता को अपना सहायक बना लिया. एन दत्ता को बर्मन दा के यहाँ फ़िल्म संगीत की तकनीक, धुनों की रचना और ऑर्केस्ट्रेशन का गहरा अनुभव मिला . उन्होंने एस डी बर्मन के साथ बहार (1951), सज़ा (1951), जाल (1952), जीवन ज्योति (1953), अँगारे (1954) आदि फ़िल्मों में बतौर सहायक संगीतकार काम किया.

जब एन दत्ता, सहायक संगीतकार के तौर पर काम कर रहे थे तभी उन्हें स्वतंत्र संगीतकार के तौर पर फ़िल्में मिलना शुरू हो गईं थी . उन्हें पहला ब्रेक मिला 1951 में आई पंजाबी फ़िल्म 'बालो' में . मगर उनकी पहली हिंदी फ़िल्म रही, साल 1955 में आई राज खोसला की फ़िल्म 'मिलाप' . जब गुरुदत की फ़िल्म 'बाज़ी' बन रही थी तब उनके सहायक राज खोसला खुद स्वतंत्र निर्देशक के रूप में शुरुआत करने की कोशिश में थे . 'बाजी' की शूट के दौरान जब उनकी मुलाक़ात एन दत्ता से हुई तो उन्होंने तय कर लिया कि उनकी फ़िल्म के संगीतकार एन दत्ता होंगे . 'मिलाप' का गीता दत्त जी का गाया 'जाते हो तो जाओ पर जाओगे कहाँ' और हेमंत कुमार और लता जी का गाया 'ये बहारों का समां खो ना जाए' काफी लोकप्रिय हुए . इसी वर्ष आई सिप्पी फ़िल्म्स की फ़िल्म 'मरीन ड्राइव' का संगीत भी एन दत्ता ने तैयार किया जो काफ़ी लोकप्रिय हुआ, इसके बाद उन्होंने सिप्पी फ़िल्म्स की 'चंद्रकांता' और कई अन्य कामयाब फ़िल्मों के लिये संगीत दिया .

एस डी बर्मन के साथ काम करते हुए एन दत्ता की मुलाक़ात महान गीतकार साहिर लुधियानवी से हुई जिनके साथ उनका बड़ा लम्बा एसोसिएशन रहा. एन दत्ता और साहिर लुधियानवी की जोड़ी हिन्दी सिनेमा की श्रेष्ठ रचनात्मक जोड़ियों में गिनी जाती है. साहिर के अर्थपूर्ण शब्दों और एन दत्ता की भावपूर्ण मधुर धुनों ने अनेक महान गीतों को जन्म दिया है . इनके संगीतबद्ध कुछ अविस्मरणीय गीत हैं 'तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा' (धूल का फूल), 'तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ' (धूल का फूल), दामन में दाग लगा बैठे '(धूल का फूल), 'धड़कने लगे दिल के तारों की दुनिया' (धूल का फूल), 'औरत ने जन्म दिया मर्दों को' (साधना) 'आज क्यों हमसे पर्दा है' (चंद्रकांता) 'मैंने चाँद और सितारों की तमन्ना की थी '(चंद्रकांता) आदि . विशेषकर फ़िल्म 'साधना' (1958) में साहिर साहब और एन. दत्ता ने 'औरत ने जन्म दिया मर्दों को' जैसा कालजयी गीत रचकर समाज की विसंगतियों को स्वर दिया. ये गीत केवल फ़िल्मी गीत नहीं, बल्कि समाज में औरतों की हालत पर गहरी टिप्पणी थी . इसी फ़िल्म के 'कहो जी तुम क्या-क्या खरीदोगे' और कई अन्य गीतों में भी सामाजिक चेतना का स्वर स्पष्ट सुनाई देता है. इसी प्रकार फ़िल्म 'धूल का फूल' (1959) का अमर गीत 'तू हिन्दू बनेगा न मुसलमान बनेगा, इंसान की औलाद है इंसान बनेगा' भारतीय फ़िल्म संगीत के इतिहास में राष्ट्रीय एकता और इंसानियत का सबसे प्रभावशाली गीत माना जाता है.

'साधना' की सफलता के बाद एन दत्ता सिप्पी फ़िल्म्स के साथ-साथ चोपड़ा फ़िल्म्स के भी प्रतिष्ठित संगीतकार बन चुके थे. ये वक़्त एन दत्ता का वक़्त था, हर निर्माता-निर्देशक उन्हें अपनी फ़िल्म में लेना चाहता था. दत्ता ने अनेक उल्लेखनीय फ़िल्मों में संगीत दिया मिलाप, भाई-बहन, ब्लैक कैट, मरीन ड्राइव, चंद्रकांता, साधना, धूल का फूल, धर्मपुत्र, दीदी, नाचघर, जालसाज़, मि जॉन, मि एक्स, और दो भाई जैसी फ़िल्मों में उनका संगीत सुनाई दिया, जिसे लोगों ने बेहद पसंद किया. वो उनकी ज़िंदगी का सबसे कामयाब दौर था. यहाँ बी आर चोपड़ा की दो फ़िल्मों का ज़िक्र करना लाजिमी है, 'धूल का फूल' और 'धर्मपुत्र' . 'धूल का फूल' एन दत्ता की सबसे मशहूर फ़िल्म कही जा सकती है, इस का विषय गंभीर था, उसके बावजूद एन दत्ता ने सिचुएशन के मुताबिक ऐसी धुनें बनाईं कि हर एक गीत को लाजवाब बना दिया . हालांकि 'धर्मपुत्र' उतनी कामयाब नहीं हुई, मगर इसका संगीत जबरदस्त सफल रहा. खासकर आशा भोसले की गाई लाजवाब नज़्म 'मैं जब भी अकेली होती हूँ', महेन्द्र कपूर द्वारा गाया गीत 'भूल सकता है भला कौन ये प्यारी आँखें' और 'आज की रात नहीं शिकवा शिकायत के लिए' उम्दा रचनाएं हैं. साहिर के अलावा भी जब कभी एन दत्ता को अच्छे शायरों का साथ मिला तब उनकी धुनों ने कमाल कर दिखाया. फिर चाहे वो जाँनिसार अख्तर हों या मजरूह सुल्तानपुरी. एन दत्ता के कुछ और अविस्मरणीय गीत हैं, 'अब वो करम करें कि सितम, मैं नशे में हूँ' (मरीन ड्राइव), 'मैं तुम्हीं से ये पूछती हूँ मुझे तुमसे प्यार क्यूँ है' (ब्लैक कैट), 'तुम मुझे भूल भी जाओ तो यह हक है तुमको' (दीदी), 'तोरा मनवा क्यूँ घबराये रे' (साधना) , 'दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले (दशहरा), 'प्यार का जहां हो छोटा सा मकान हो' (जालसाज), 'मेरी तस्वीर लेकर क्या करोगे, तुम मेरी तस्वीर लेकर' ('काला समंदर), 'पोंछ कर अश्क अपनी आँखों से '(नया रास्ता) आदि हैं.

एन. दत्ता का संगीत शोर-शराबे से दूर, मधुरता और भावप्रधानता पर आधारित था. वे सीमित वाद्ययंत्रों का अत्यंत प्रभावी उपयोग करते थे. उनकी धुनों में भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोकधुनों तथा गोवा के परम्परागत संगीत की झलक दिखाई देती है . एन. दत्ता की धुनों में भारतीय शास्त्रीय संगीत का आधार तो था ही, साथ ही वे पाश्चात्य ऑर्केस्ट्रेशन और लय का बेहद सुरीला प्रयोग करने में भी माहिर थे. हिंदी फ़िल्मों के अलावा उन्होंने मराठी सिनेमा में भी संगीत दिया. मराठी फ़िल्म 'बाला गाऊ कशी अंगाई' (1977) में सुमन कल्याणपुर द्वारा गाया लोरी गीत 'निंबोणीच्या झाडामागे चंद्र झोपला ग बाई' आज भी महाराष्ट्र के घर-घर में प्रसिद्ध है .

फ़िल्म 'धर्मपुत्र' के बाद से अचानक एन दत्ता का करियर ढलान की तरफ़ जाने लगा. उसकी बड़ी वजह रही उनकी ख़राब सेहत. बी आर चोपड़ा ने अपनी अगली फ़िल्म के लिए उन्हें ही साइन किया था मगर एन दत्ता को अचानक हार्ट अटैक आया. और उन्हें ये डर बैठ गया कि वो शायद अब कभी ठीक नहीं होंगे. उन्हें इस बीमारी और डर से उबरने में वक़्त लग गया और इसी दौरान बी आर फ़िल्म्स में संगीतकार रवि की एंट्री हुई और सब जानते हैं कि 'गुमराह' के बाद रवि, बी आर फ़िल्म्स के स्थाई संगीतकार बन गए . इसी प्रकार सिप्पी फ़िल्म्स में भी ओ पी नैयर का आगमन हो गया . इस बीमारी से तो एन दत्ता ठीक हो गये आए मगर अपने करियर में वो जिस मुकाम पर थे, उस जगह वापसी नहीं कर पाए. धीरे-धीरे एन दत्ता के लिए बड़े बैनर्स की फ़िल्मों का रास्ता बंद होता गया और उस समय जो भी फ़िल्में मिली वो स्वीकार करते चले गए. हाँलाकि उस तरह की फ़िल्मों में भी उनकी धुनें बहुत मधुर रहीं और गाने भी लोकप्रिय हुए मगर उनका सुनहरा दौर फिर लौट कर नहीं आया. उस दौर में उन्होंने ग्यारह हज़ार लड़कियाँ (1962), काला समंदर (1962), रुस्तम-ए-बग़दाद (1963), चाँदी की दीवार (1964) जैसी बहुत सी फ़िल्में कीं जिनमें छोटे बजट की स्टंट और मराठी फ़िल्मों भी शामिल रहीं. वर्ष 1970 में आई 'नया रास्ता' उनकी आख़िरी उल्लेखनीय फ़िल्म रही, मगर इसकी कामयाबी भी एन दत्ता को कोई खास फायदा नहीं पहुंचा सकी .

उनके जीवन के अंतिम वर्ष गुमनामी और आर्थिक कठिनाइयों से गुज़रे. कहते हैं कि एक समय पर उन्हें इतने बुरे दिन देखने पड़े कि वो चोरी-छुपे दूसरे संगीतकारों के ऑर्केस्ट्रा में वादक के रुप में शामिल होने लगे थे. उनकी ये दशा देख कर लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल ने उन्हें अपने ऑर्केस्ट्रा में रख लिया. एन दत्ता रिकॉर्डिंग में उपस्थित हों या नहीं, रिकॉर्डिंग के बाद उनका मेहनताना उन तक पहुंचा दिया जाता था. धीरे धीरे उनकी सेहत लगातार गिरती गई और फिर वो दिन आया, 30 दिसंबर 1987, जब उन्होंने आख़िरी साँस ली. यद्यपि वे अपने समय के सबसे चर्चित संगीतकारों में नहीं रहे, फिर भी उनके गीत आज भी संगीत प्रेमियों के लिए अमूल्य धरोहर हैं. वो ऐसे संगीतकार थे जिन्होंने अपनी मौलिक धुनों से संगीत प्रेमियों के हृदय में अमिट स्थान बनाया .आज के लिये इतना ही, अगले सप्ताह फिर मुलाक़ात होगी, तब तक महान संगीतकार एन. दत्ता की मधुर अविस्मरणीय धुनें सुनिए और आनंदित रहिये .

शूर्पणखा के किरदार में छाईं रकुल प्रीत सिंह

बहुप्रतीक्षित फिल्म 'रामायणम्' के ट्रेलर रिलीज़ होने के बाद अभिनेत्री रकुल प्रीत सिंह अपने शूर्पणखा अवतार को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चा का केंद्र बन गई हैं. ट्रेलर में उनकी संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली झलक को दर्शकों ने खूब सराहा है और कई प्रशंसकों ने उन्हें इस किरदार के लिए उपयुक्त चयन बताया है.

सोशल मीडिया मंच एक्स और अन्य प्लेटफॉर्म पर दर्शकों ने रकुल के लुक, स्क्रीन प्रेजेंस और किरदार के प्रस्तुतीकरण की प्रशंसा की. कई प्रशंसकों ने उन्हें अब तक की सबसे आकर्षक शूर्पणखा बताते हुए फिल्म की कास्टिंग की सराहना की. पौराणिक कथाओं में शूर्पणखा को एक प्रभावशाली और आकर्षक व्यक्तित्व के रूप में वर्णित किया गया है और रकुल प्रीत सिंह इस किरदार को प्रभावी ढंग से पर्दे पर उतारती नजर आ रही हैं. ट्रेलर में उनके सीमित स्क्रीन टाइम के बावजूद उनका किरदार दर्शकों का ध्यान खींचने में सफल रहा है.

फिल्म के ट्रेलर को लेकर सोशल मीडिया पर सकारात्मक प्रतिक्रियाओं का सिलसिला जारी है. कई प्रशंसकों ने रकुल की स्क्रीन उपस्थिति को ट्रेलर की प्रमुख झलकियों में से एक बताया है. वहीं, कुछ दर्शकों ने उनकी कास्टिंग को फिल्म निर्माताओं का बेहतरीन निर्णय करार दिया है. रामायणम् के ट्रेलर को दर्शकों से व्यापक प्रतिक्रिया मिल रही है और रकुल प्रीत सिंह का शूर्पणखा अवतार इसकी चर्चित झलकियों में शामिल हो गया है. ऑनलाइन प्रतिक्रियाओं को देखते हुए माना जा रहा है कि दर्शक बड़े पर्दे पर उनके इस किरदार को देखने के लिए उत्सुक हैं.

पैरेंटहुड को लेकर करिश्मा तन्ना का बड़ा खुलासा

अभिनेत्री करिश्मा तन्ना ने माता-पिता बनने के अपने निजी सफर को लेकर खुलकर बात करते हुए कहा कि एक समय उन्हें और उनके पति वरुण बंगेरा को लगता था कि दुनिया की परिस्थितियां बच्चे के स्वागत के लिए अनुकूल नहीं हैं.नेहा धूपिया और अंगद बेदी के चैट शो 'डबल डेट' में बातचीत के दौरान करिश्मा ने बताया कि कोविड-19 महामारी, दुनिया के विभिन्न हिस्सों में चल रहे संघर्षों और बढ़ती अनिश्चितताओं के बीच वह लंबे समय तक पैरेंटहुड को लेकर असमंजस में रहीं.

करिश्मा ने कहा, 'मैं बच्चा नहीं चाहती थी क्योंकि मुझे लगता था कि दुनिया एक और बच्चे के लिए तैयार नहीं है. कोविड था, दुनिया में युद्ध चल रहे थे और चारों तरफ अनिश्चितता का माहौल था. हम सच में इस बात को लेकर उलझन में थे कि क्या हमें अपने बच्चे को ऐसी दुनिया में लाना चाहिए.'

उन्होंने बताया कि यह फैसला उनके और वरुण के लिए आसान नहीं था और दोनों ने इस विषय पर काफी विचार-विमर्श किया. हालांकि, तमाम आशंकाओं और सवालों के बावजूद उन्होंने उम्मीद और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने का निर्णय लिया. करिश्मा ने कहा, लेकिन फिर आखिरकार हमने फैसला लिया और आज हम यहां हैं. अब हमारी बस यही कोशिश है कि हम अपने बच्चे को सबसे अच्छा जीवन दे सकें. करिश्मा की यह भावुक टिप्पणी उन अनेक दंपतियों की चिंताओं को भी दर्शाती है, जो परिवार बढ़ाने जैसे महत्वपूर्ण फैसले से पहले बदलती वैश्विक परिस्थितियों और भविष्य को लेकर गंभीरता से विचार करते हैं. करिश्मा ने कहा कि अंततः उन्होंने उम्मीद को चुना और अब उनका लक्ष्य अपने बेटे को सुरक्षित, खुशहाल और बेहतर भविष्य देना है.

रामायणम् का ट्रेलर रिलीज

नमित मल्होत्रा की बहुप्रतीक्षित फिल्म 'रामायणम: पार्ट 1' का आधिकारिक ट्रेलर गुरुवार को दुनिया भर में रिलीज़ कर दिया गया. हिंदी, कन्नड़, तेलुगु, तमिल और मलयालम सहित पांच भारतीय भाषाओं में जारी ट्रेलर में राम और रावण के बीच होने वाले महायुद्ध की भव्य झलक दिखाई गई है.

नितेश तिवारी के निर्देशन में बनी यह फिल्म प्राइम फोकस स्टूडियोज़, डीएनईजी और मॉन्स्टर माइंड क्रिएशंस के सहयोग से तैयार की गई है. फिल्म दिवाली 2026 पर विश्वभर के सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी. इसके वैश्विक वितरण की जिम्मेदारी सोनी पिक्चर्स संभालेगी, जबकि उत्तर भारत में इसका वितरण धर्मा प्रोडक्शंस करेगा.

फिल्म में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता और पैन इंडिया स्टार यश रावण की भूमिका में नजर आएंगे. कलाकारों की टोली में अरुण गोविल, लारा दत्ता, रवि दुबे, अजिंक्य देव, कुणाल कपूर और रकुल प्रीत सिंह भी शामिल हैं. फिल्म की कहानी भगवान विष्णु के राम अवतार, उनके वनवास और रावण के साथ होने वाले धर्म-अधर्म के संघर्ष पर आधारित है. निर्माताओं के अनुसार यह दो भागों में बनने वाली एक भव्य सिनेमाई प्रस्तुति है, जिसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति और विरासत को वैश्विक दर्शकों तक पहुंचाना है. फिल्म की पटकथा श्रीधर राघवन ने लिखी है, जबकि संगीत ऑस्कर विजेता हांस ज़िमर और ए.आर. रहमान ने तैयार किया है. फिल्म में अत्याधुनिक विजुअल इफेक्ट्स और अंतरराष्ट्रीय स्तर की तकनीक का उपयोग किया गया है.

एक्शन से ज्यादा इमोशन पर टिकी नई स्पाइडर-मैन की कहानी

मार्वल स्टूडियोज की स्पाइडर मैन ब्रांड न्यू डे सुपरहीरो फिल्मों के उस दौर में आई है, जहां बड़े-बड़े कैमियो, मल्टीवर्स और विशाल एक्शन सीक्वेंस दर्शकों के लिए सामान्य बात बन चुके हैं. ऐसे समय में यह फिल्म भीड़ से अलग रास्ता चुनती है. कहानी पूरी तरह पीटर पार्कर के व्यक्तिगत संघर्ष, अकेलेपन और जिम्मेदारियों के इर्द-गिर्द घूमती है. यही कारण है कि फिल्म शुरुआत से अंत तक भावनात्मक रूप से दर्शकों से जुड़ी रहती है.

कहानी उस समय से शुरू होती है, जब 'नो वे होम' की घटनाओं के बाद दुनिया पीटर पार्कर को भूल चुकी है. उसके अपने दोस्त, रिश्तेदार और करीबी लोग भी अब उसे नहीं पहचानते. ऐसे में वह एक सामान्य जीवन जीने की कोशिश करता है, लेकिन न्यूयॉर्क की सुरक्षा का दायित्व उसे लगातार स्पाइडर-मैन बनने के लिए मजबूर करता है. इसी दौरान एक नया और खतरनाक दुश्मन सामने आता है, जो केवल शहर ही नहीं, बल्कि पीटर के आत्मविश्वास और मानसिक मजबूती को भी चुनौती देता है. टॉम हॉलैंड ने इस फिल्म में अपने करियर के सबसे परिपक्व प्रदर्शनों में से एक दिया है. उनके अभिनय में दर्द, जिम्मेदारी और उम्मीद का संतुलन साफ दिखाई देता है. एक्शन दृश्यों में उनकी ऊर्जा और भावनात्मक दृश्यों में उनकी सहजता फिल्म को मजबूत आधार देती है. सहायक कलाकार भी अपने किरदारों के साथ न्याय करते हैं और कहानी को मजबूती प्रदान करते हैं. निर्देशन की बात करें तो फिल्म की सबसे बड़ी उपलब्धि इसकी गति और संतुलन है.

टेलीविजन हलचल

क्या हुस्ना की साजिश में फंस जाएगी सहर

शो 'सहर होने को है' में दर्शकों को जल्द ही इमोशन, सस्पेंस और ड्रामे से भरपूर एपिसोड देखने को मिलने वाला है. कहानी का केंद्र इस बार सहर, माहीद और हुस्ना के बीच चल रही खतरनाक जंग है, जिसमें हर पल हालात बदलते नजर आ रहे हैं. सहर बड़ी मुश्किल से माहीद को सबसे छिपाकर रखती है. हालांकि हुस्ना को पूरा यकीन है कि माहीद कहीं गया नहीं है और सहर ही उसे छिपा रही है. अपने शक को सच साबित करने के लिए हुस्ना एक नई साजिश रचती है, ताकि माहीद और सहर दोनों बेनकाब हो जाएं .इसी बीच सहर से एक गंभीर गलती हो जाती है. वह अनजाने में माहीद को गलत दवा दे देती है, जो उसकी नाजुक हालत के लिए और भी खतरनाक साबित होती है. सहर को लगता है कि दवा से माहीद शांत हो जाएगा, लेकिन तभी अस्पताल में डॉ. फहीद अचानक निरीक्षण की घोषणा कर देते हैं. अस्पताल प्रशासन की जांच के कारण सहर चाहकर भी माहीद के पास नहीं लौट पाती. सहर की गैरमौजूदगी में माहीद बेचैन हो जाता है. उसे लगता है कि सहर उसे छोड़कर चली गई है. गुस्से और निराशा में वह सहर के लिए तैयार किया गया अपना तोहफा भी तोड़ देता है. जब सहर वापस लौटती है और माहीद की बिगड़ी हालत देखती है, तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है. वह माफी मांगते हुए उसे संभालने की कोशिश करती है और दोनों के बीच भावनात्मक नजदीकियां भी बढ़ती दिखाई देती हैं.

कार्तिक-वृंदा की सगाई में आएगा बड़ा ट्विस्ट

चर्चित शो 'क्योंकि रिश्तों के भी रूप बदलते हैं' की कहानी लगातार नए मोड़ों से दर्शकों को बांधे हुए है. आने वाले एपिसोड में अंगद, वृंदा और कार्तिक के बीच ऐसा हाई-वोल्टेज ड्रामा देखने को मिलेगा, जो पूरे परिवार की जिंदगी बदल सकता है. अक्षय की सहमति मिलने के बाद वृंदा अपने बच्चों की खुशी के लिए कार्तिक से शादी करने का फैसला कर लेती है. बाहर से वह इस रिश्ते को स्वीकार करती दिखाई देती है, लेकिन उसके दिल में आज भी अंगद की यादें और अधूरा प्यार जिंदा है. इसी दौरान अंगद, जो एवी के नाम से पहचान बना चुके हैं, सोशल मीडिया पर आरव के साथ एक तस्वीर साझा करते हैं. तस्वीर वायरल होने के बाद उन्हें ट्रोलिंग का सामना करना पड़ता है. स्थिति तब और उलझ जाती है, जब आरव ट्रोलिंग से बचने के लिए कह देता है कि एवी उसकी बुआ की सगाई में शामिल होंगे. इस बात पर विश्वास कर अंगद जमशेदपुर पहुंच जाते हैं. उन्हें यह बिल्कुल नहीं पता होता कि जिस सगाई में वह जा रहे हैं, वह वृंदा और कार्तिक की है. समारोह में अंगद की एंट्री से परिवार हैरान तो होता है, लेकिन उन्हें देखकर खुश भी नजर आता है. हालांकि यह खुशी ज्यादा देर नहीं टिकती. जैसे ही कार्तिक अपना परिचय देता है और वृंदा सामने आती है, अंगद मास्क हटाकर अपना चेहरा दिखाते हैं. यह दृश्य देखकर वृंदा पूरी तरह चौंक जाती है और माहौल अचानक तनावपूर्ण हो जाता है. इसके बाद परिवार के कई सदस्य अंगद पर आरोप लगाने लगते हैं कि वह एक बार फिर वृंदा की जिंदगी में उथल-पुथल मचाने लौटे हैं.

असम बाढ़ राहत के लिए आगे आए आयुष्मान और ताहिरा

अभिनेता आयुष्मान खुराना और उनकी पत्नी ताहिरा कश्यप ने असम में बाढ़ से प्रभावित लोगों की सहायता के लिए मुख्यमंत्री राहत कोष में आर्थिक योगदान देकर राहत कार्यों को समर्थन दिया है. उनकी ओर से दी गई सहायता राशि का उपयोग राज्य में चल रहे राहत एवं पुनर्वास कार्यों के लिए किया जाएगा, जिससे प्रभावित परिवारों को आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी. असम के कई जिलों में बाढ़ के कारण बड़ी संख्या में लोगों को अपने घर छोड़ने पड़े हैं. राहत शिविरों में रह रहे परिवारों को भोजन, पेयजल, स्वास्थ्य सेवाओं और अन्य जरूरी संसाधनों की आवश्यकता है. ऐसे समय में आयुष्मान और ताहिरा का यह सहयोग मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक जिम्मेदारी का उदाहरण माना जा रहा है.

यह पहली बार नहीं है जब इस दंपति ने किसी आपदा या सामाजिक अभियान में मदद का हाथ बढ़ाया हो. कोविड-19 महामारी के दौरान भी दोनों ने महाराष्ट्र मुख्यमंत्री राहत कोष में आर्थिक सहायता प्रदान की थी. इसके अलावा उन्होंने दिल्ली की सामाजिक संस्था गुलमेहर का भी समर्थन किया, जो कचरा बीनने वाली महिलाओं के सशक्तिकरण और उनके परिवारों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए कार्य करती है. आयुष्मान खुराना सामाजिक मुद्दों पर अपनी सक्रिय भागीदारी के लिए भी जाने जाते हैं.

यूनिसेफ इंडिया के राष्ट्रीय एंबेसडर के रूप में वह बच्चों के अधिकार, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और समग्र विकास से जुड़े अभियानों में लगातार अपनी आवाज़ उठाते रहे हैं. वहीं ताहिरा कश्यप भी विभिन्न सामाजिक पहलों और जागरूकता अभियानों से जुड़ी रही हैं.

सुरीली आवाज से दिलों पर राज करते सोनू निगम

अपनी मधुर आवाज से संगीत प्रेमियों के दिलों पर राज करने वाले मशहूर पार्श्वगायक सोनू निगम आज 53 वर्ष के हो गये ।सोनू निगम का जन्म 30 जुलाई 1973 को हरियाणा के फरीदाबाद शहर में हुआ। उनके माता-पिता भी गायक थे, जिसके कारण बचपन से ही उनका रुझान संगीत की ओर रहा. वह भी अपने माता-पिता की तरह गायक बनना चाहते थे. महज तीन वर्ष की उम्र से उन्होंने अपने पिता के साथ स्टेज कार्यक्रमों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया था.

गायकी को अपना करियर बनाने का सपना लेकर सोनू निगम 19 वर्ष की उम्र में अपने पिता के साथ मुंबई आ गए. मायानगरी में उन्हें शुरुआती दौर में काफी संघर्ष करना पड़ा. जीवन यापन के लिए वह स्टेज कार्यक्रमों में मोहम्मद रफी के गाए गीत प्रस्तुत किया करते थे. इसी दौरान टी-सीरीज ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उनके गाए गीतों का एलबम 'रफी की यादें' जारी किया. सोनू निगम ने पार्श्वगायक के रूप में अपने फिल्मी करियर की शुरुआत फिल्म 'जनम' से की, हालांकि दुर्भाग्यवश यह फिल्म प्रदर्शित नहीं हो सकी.

इसके बाद करीब पांच वर्षों तक उन्होंने बॉलीवुड में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्ष किया. कई लोगों ने उन्हें अवसर देने का भरोसा दिलाया, लेकिन उन्हें अपेक्षित मौके नहीं मिले. इस दौरान उन्होंने बी और सी ग्रेड फिल्मों के लिए भी पार्श्वगायन किया, लेकिन उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली.